LOK SABHA

Saturday, March 25, 1972/Chaitra 5, 1894 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

PAPER LAID ON THE TABLE

STATEMENT ON DIFFERENTIAL INTEREST RATES ON ADVANCES BY PUBLIC SECTOR BANKS

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN) : I beg to lay on the Table a statement (Hindi and English versions) on differential interest rates on advances by Public Sector Banks. [*Placed in Library*. See No. LT- 1553/72]

11-03 hrs.

ASSENT TO BILIS

SECRETARY : Sir, I lay on the Table following four Bills passed by the Houses of Parliament during the current session and assented to since a report was last made to the House on the 14th March, 1972 :—

(1) The Appropriation Bill, 1972.

(2) The Appropriation (No.2) Bill, 1972.

(3) The Appropriation (Railways) Bill, 1972.

(4) The Appropriation (Railways) No. 2 Bill, 1972.

11.04 hrs.

BUSINESS OF THE HOUSE

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI RAJ BAHADUR) : With your permission, Sir, I rise to announce that Government Business in this House during the week commencing Tuesday, the 28th March, 1972, will consist of :—

(1) Consideration of any item of business carried over from today's order paper.

(2) Consideration and passing of :

(a) The Armed Forces (Assam and Manipur) Special Powers (Amendment) Bill, 1972 as passed by Rajya Sabha).

(b) The Aircraft (Amendment) Bill, 1972.

(c) The Marine Products Export Development Authority Bill, 1972.

(3) Further discussion on the Motion of Thanks on the President's Address.

श्री इसहाक सम्भली (अमरोहा) : अध्यक्ष महोदय, हमारे रहनुमा प्रोफेसर हीरेन मुखर्जी, श्री एस० एम० बनर्जी और मैंने अभी आपकी खिदमत में लिख कर दिया है । परसों दिल्ली में एक बहुत अफसोसनाक दुर्घटना हुई । मुझे बड़े शर्म के साथ कहना पड़ता है कि प्राइम मिनिस्टर जो हिन्दुस्तान की सबसे महबूब रहनुमा हैं उनसे मिलने के लिए जो डेपुटेशन आए, और वह डेपुटेशन भी हिन्दुस्तान के एक बड़े अहम एजूकेशनल इंस्टीट्यूशन का हो, इसके बाद भी उन से मुलाकात न हो और उनको अरेस्ट कर लिया जाय, यह बड़े अफसोस की बात है । मैं कहना चाहता हूं कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स यहां पर आए, वह प्राइम मिनिस्टर से मिल करके अपनी कुछ बात कहना चाहते थे, जहां तक मेरी इत्तिला है, मैं वहां मौजूद नहीं था, लेकिन उन्होंने कोई काबिले एतराज नारे नहीं लगाए, यहां तक कि उन्होंने एक लब्ज भी वह नहीं कहा जो काबिले एतराज कहा जा सके । अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के बारे में उनकी डिमांड्स थीं, वह डिमांड्स क्या हैं, पूरी हो जानी चाहिए, तस्लीम होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए, यह अपनी जगह पर बहस करने